मृच्छकटिकम् के द्वितीय अङ्क का कथानक

द्वितीय अङ्क के प्रथम दृश्य में वसन्तसेना और मदनिका रंगमंच पर आती हैं। एक चेटी (सेविका) वसन्तसेना की माता का आदेश लेकर वसन्तसेना से स्नान और भूजन करने के लिए कहती है। किन्तु वसन्तसेना इनकार कर देती है। वह चेटी वापस चली जाती है। मदनिका वसन्तसेना की उदासी देखकर इसका कारण पूछती है। वह चारुदत्त के प्रति अपने प्रेम का रहस्य प्रकट कर देती है। जब मदनिका चारुदत्त की अति निर्धनता कहती है ~~वह~~ तो वह वसन्तसेना अपना निर्लोभ प्रेम और चारुदत्त के रमणेच्छा प्रकट करती है।

द्वितीय अंक दूसरे दृश्य में जूये में हारा हुआ संवाहक रंगमंच पर आता है। वह जुये अतिशय निन्दा करता है और अपनी रक्षा के लिए मूर्तिरहित मन्दिर में जाकर देवता के समान निश्चल होकर खड़ा हो जाता है। ~~उस~~ उसको खोजते हुए सभिक (जुआरियों का अगुवा = प्रतिनिधि) माथुर और द्यूतकर भी वहीं पहुँच जाते हैं। वे अपनी हानि के ~~लिए~~ लिए चिल्लाते हुए उसी मन्दिर में घुस कर पुनः जुआ खेलने लगते हैं। जुआ देखकर संवाहक अपनी इच्छा नहीं रोक पाता है और अचानक ~~खेलने~~ खेलने आ जाता है। वे दोनों उसे पकड़ लेते हैं और अपनी उधार दी गई दश सुवर्ण-मुद्राएँ माँगने लगते हैं। न देने पर पीटने लगते हैं। तब संवाहक अपने को बेचकर ऋण चुकाना चाहता है। इसी दर्दुरक वहाँ आ जाता है। ~~वह~~ वह संवाहक का पक्ष लेता है। माथुर और दर्दुरक में झगड़ा होता है।

Scanned with CamScanner

मौका देखकर दर्दुरक माथुर की आँखों में धूल झोंक कर संवाहक से भागने का इशारा करता है। जब तक माथुर आँखों से धूल निकालता है, तब तक वे दोनों (संवाहक और दर्दुरक) भाग जाते हैं।

द्वितीय अंक तीसरे दृश्य में और धूलकर भय से भागा हुआ संवाहक वसन्तसेना के घर पहुँच जाता है। उसका पीछा करते हुए वे दोनों भी वहाँ पहुँच जाते हैं। संवाहक वसन्तसेना को अपना परिचय देकर अपने को चारुदत्त का पुराना सेवक (संवाहक) बताता है। इससे वसन्तसेना ~~प्रसन्न~~ प्रसन्न होकर उसके भय का कारण पूछती है। वह संवाहक जुए में हार और कर्ज की घटना बता देता है। सारी बातें सुनकर वसन्तसेना अपनी सेविका द्वारा आभूषण भेजकर उन दोनों को आभूषण दिला देती है जिससे वे दोनों प्रसन्न होकर वापस चले जाते हैं। किन्तु जुए में हारने के ~~बाद~~ कारण हुए अपमान की ग्लानि से वह संवाहक बौद्ध सन्यासी बनना चाहता है। वसन्तसेना द्वारा मना किए जाने पर भी वह अपना निश्चय नहीं बदलता है और सन्यासी बनने के लिए चला जाता है।

द्वितीय अंक के चौथे दृश्य में कर्णपूरक प्रवेश करता है। वह वसन्तसेना से उसके ~~खुण्डमोटक~~ 'खुण्डमोटक' नामक मतवाले हाथी के उपद्रव और उससे परिव्राजक को बचाने के लिए किए गए अपने पराक्रम की चर्चा करता है। वह भीड़ में खड़े हुए किसी व्यक्ति (चारुदत्त) द्वारा दिए गए दुपट्टे को दिखाता है। वसन्तसेना पहचान कर उसे ओढ़ लेती है और कर्णपूरक को पुरस्कार में आभूषण दे देती है। कर्णपूरक खुश होकर चला जाता है। उसके मुख से चारुदत्त के जाने की बात सुनकर वह वसन्तसेना अपनी सेविका के साथ ऊपर छत पर चढ़कर चारुदत्त को देखने के लिए चली जाती है।

Scanned with CamScanner